शोध मंथन Vol. XIII No.IV Oct.-Dec. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

सर्वोदय दर्शन और विनोबा भावे

प्राप्तिः 19.10.2022
स्वीकृतः 25.12.2022

89

डॉ० सीमा रानी
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग
डी०ए०के० कॉलिज, मुरादाबाद (उ०प्र०) भारत
ईमेलः *drseemarani@rediffmail.com*

कमल सिंह
शोधार्थी
मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार, चित्तौड़गढ़ (राज०) भारत

सारांश

सर्वोदय की पृष्ठभूमि आध्यात्मिक है। प्रत्येक प्राणी मात्र के लिए, समादर और सहानुभूति ही सर्वोदय का मार्ग है। सर्वोदय का क्रम यही है, शासन से अनुशासन की ओर, सत्ता से स्वतन्त्रता की ओर, नियन्त्रण से संयम की ओर, और अधिकारों की स्पर्धा से परे कर्तव्यों के आचरण की ओर बढ़ो। श्रम का जितना मूल्य होता है, वह श्रमिक को नहीं मिलता। उसे उतना ही मिलता है, जितना जीवित रहने के लिए जरुरी है। शेष श्रममूल्य मालिक हड़प जाता है । पूंजीवाद के दोशों का निराकरण करने हेतु समाजवादी विचारधारा का जन्म हुआ। सर्वोदय में व्यापकता है। आध्यात्मिक रूप से यह अद्वैत की स्थापना है। सर्वोदय अक्षम् को सक्षम् बनाता है।

प्रस्तावना

सर्वोदय भारत का प्राचीन आदर्श है। हमारे ऋषि मुनियों ने गाया है– ''सर्वेपि सुखिनः सन्तु"। सर्वोदय शब्द भी नया नहीं है। जैन मुनि समन्तभद्र जी कहते हैं– सर्वापदामंतकरं निरंतं सर्वोदयं तीर्थमिदं तदैव। ''वसुधैव कुटुम्बकम'' अथवा ''सोहम'' और ''तत्वमसि'' के हमारे पुरातन आदर्शों में ''सर्वोदय'' के सिद्धान्त अन्तर्निहित हैं। ''सर्वोदय'' ऐसे वर्गविहीन, जातिविहीन और शोषणमुक्त समाज की स्थापना करना चाहता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और समूह को अपने सर्वांगीण विकास का साधन और अवसर मिले। सर्वोदय समाज गाँधी के कल्पनाओं का समाज था, जिसके केन्द्र में भारतीय ग्राम व्यवस्था थी। विनोबा जी ने कहा है, सर्वोदय का अर्थ है– सर्वसेवा के माध्यम से समस्त प्राणियों की उन्नति। सर्वोदय के व्यवहारिक स्वरूप को हम विनोबा जी के भूदान आन्दोलन में देख सकते हैं।

सर्वोदय की अवधारणा

सर्वोदय की अवधारणा के सम्पूर्ण बोध के लिए इसकी पृष्ठभूमि को जानना आवश्यक है–

जोहान्सबर्ग स्टेशन पर, मिस्टर पोलक ने, रस्किन की 'अन टू द लास्ट' पुस्तक गाँधी जी के हाथों में रखते हुए कहा– यह पुस्तक रास्ते में पढ़ने लायक है।

इस पुस्तक ने गाँधी जी की जीवन धारा पलट दी, उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा– इसे हाथ में लेने के बाद मैं इसे छोड़ नहीं सका, इसने मुझे जकड़ लिया। ट्रेन शाम को डर्बन पहुँची। सारी रात मुझे नींद नहीं आई। पुस्तक के दिये गये आदर्शों के समान अपने जीवन को ढालने का मैंने

निश्चय कर लिया। इस पुस्तक ने मुझ पर तत्काल प्रभाव डाला और मुझमें महत्वपूर्ण ठोस परिवर्तन किया। ऐसी तो एक ही पुस्तक है। मेरा विश्वास है कि मेरे हृदय के गहनतम स्तर में जो भावनायें छिपी पड़ी हैं, उनका समावेश मैंने इस पुस्तक में देखा है और इसलिए उन्होंने मुझे अभिभूत कर जीवन परिवर्तित करने के लिए विवश किया, रस्किन ने इस पुस्तक में मुख्यतः तीन बातें बताई हैं।

1. व्यक्ति का श्रेय, समष्टि के श्रेय में ही निहित है।
2. वकील का काम हो, चाहे नाई का, दोनों का मूल्य समान ही है। कारण, प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यवसाय द्वारा अपनी जीविका चलाने का अधिकार है।
3. मजदूर, किसान, कारीगर का जीवन ही श्रेष्ठ है।

पहली बात मैं जानता था, दूसरी बात मेरे सामने थी और तीसरी बात पर तो मैंने विचार ही नहीं किया था।

"अन टू द लास्ट" पुस्तक ने सूर्य के प्रकाश की भांति मेरे समक्ष यह स्पष्ट कर दिया कि पहली बात में ही दूसरी और तीसरी बात समाई हुई है।"1

महात्मा गाँधी ने अन्त्योदय के बजाय, सर्वोदय की कल्पना की। इस कल्पना का आधार बाइबिल की एक कहानी है– "अंगूरों के बगीचे के मालिक ने एक दिन अपने यहाँ काम करने के लिए मजदूर रखे। एक रोज दोपहर को वह मजदूरों के अड्डे पर गया और देखा कि वहाँ अब भी कुछ मजदूर खड़े हैं, उसने उन्हें भी काम पर रख लिया। काम समाप्त होने पर उसने मुनीम से कहा कि इन सब मजदूरों को मजदूरी दे दो। जो लोग सबसे अन्त में आये हैं, उन्हीं से मजदूरी बाँटना शुरू करो। मुनीम ने सबको एक–एक पैनी दी। सुबह से आने वाले मजदूर सोच रहे थे कि शाम को आने वालों को एक–एक पैनी मिल रही है, तो उन्हें दो पैनी मिलेंगी लेकिन जब उन्हें भी एक ही पैनी मिली। वे मजदूर बोले– ऐसा क्यों? हम दिन भर धूप में काम करते रहे। हमें भी एक ही पैनी क्यों?

मालिक बोला– हमने तुम्हारे प्रति कोई अन्याय नहीं किया। तुमने एक पैनी रोज पर काम करना आरम्भ किया था, तो एक पैनी लो और जाओ। मैं अन्त वाले को भी उतनी ही मजदूरी दूंगा, जितना तुम्हें। मुझे अपनी चीज अपनी इच्छा के अनुसार खर्च करने का अधिकार है। तो तुम्हें दुःख क्यों हो रहा है।

इस कहानी में, सुबह वाले को भी उतना, शाम वाले को भी उतना, वाली बात विचित्र लगती है, पर इसमें मानवता, समानता अद्वैत का तत्व निहित है और इन्हीं तत्वों की बुनियाद पर सर्वोदय का विशाल भवन खड़ा है। प्रश्न उठता है, सर्वोदय क्या है? सर्वोदय का अर्थ है, सबका उत्कर्ष, सबका विकास। गीता में कहा गया है–

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित दुःख भाग्यभवेत् ।।"

"सर्वोदय मानता है कि सर्वोदय कोरा स्वप्न या कोहरा आदर्श नहीं है। यह आदर्श व्यावहारिक है। प्रयोग में लाया जा सकता है। यह सत्य है कि सर्वोदय का आदर्श ऊँचा है, लेकिन यह न तो अप्राप्य है, न असाध्य, यह प्रयत्न साध्य है। सर्वोदय का आदर्श है अद्वैत व उसकी नीति का समन्वय। यह मानव–कृत विषमता का निराकरण है और प्राकृतिक विषमता को कम करना चाहता है। सर्वोदय की दृष्टि में जीवन एक विधा है, एक कला है। प्रत्येक प्राणी मात्र के लिए, समादर और

सहानुभूति ही सर्वोदय का मार्ग है। जीव मात्र के लिए सहानुभूति का यह अमृत जब जीवन में प्रवाहित होता है, तो जीवन–सर्वोदय की लता में सुरभिपूर्ण सुमन खिल उठते हैं।"[2]

आज के समाज में राज्य–सत्ता, शस्त्र–सत्ता और धन–सत्ता का वर्चस्व देखा जा रहा है । यह भी सत्य है कि इन तीनों सत्ताओं पर से लोगों का विश्वास उठता जा रहा है और वे किसी मानवीय शान्ति की खोज में लगे हैं । यह मानवीय शान्ति सर्वोदय के माध्यम से ही विकसित हो सकती है।

राज्य–सत्ता, शस्त्र–सत्ता और धन–सत्ता में हिंसा, भय और लोभ का विकास होता है। दूसरे मानवीय गुणों की प्रतिष्ठा नहीं हो सकती। इसलिए सर्वोदय, लोकनीति का सम्पर्क है। राजनीति में जहाँ शासन मुख्य है, लोकनीति में अनुशासन, राजनीति में जहाँ सत्ता मुख्य है, वहाँ लोकनीति में स्वतंत्रता। राजनीति में जहाँ नियन्त्रण मुख्य है वहाँ लोकनीति में कर्तव्यों का आचरण।

पूंजीवाद, मेहनत मजदूर की, सम्पत्ति मालिक की, मान्यता पर आधारित है। इसका जन्म सौदेबाजी से होता है। विकास सट्टे से होता है और जुए से पल्लवित होता है। इससे संग्रह, भूख और चोरी जैसे अवगुण उत्पन्न होते हैं। मार्क्स का सिद्धान्त पूंजीवाद की प्रतिक्रिया के रूप में प्रकट हुआ।

व्यक्ति आवश्यकता के अनुसार पारिश्रमिक मिलने पर उतना ही काम करता है जितने में उसकी जरूरत पूरी होती है। इससे अनेक विसंगतियां उत्पन्न होती हैं। रूस और चीन में समाजवाद सम्बन्धी जो प्रयोग किए गए, उनसे कोई अच्छा परिणाम नहीं निकला और रूस तो इस प्रयोग में अपना आधारभूत ढांचा भी गवां बैठा। आज के युग में यन्त्र भी अपने सांस्कृतिक मूल्यों को खो बैठे हैं। यान्त्रीकरण के कारण सभी वस्तुओं का एक सा उत्पादन होता है, यांत्रिकता के कारण व्यक्तित्व का विकास अवरुद्ध हो गया है। इससे केंद्रीकरण विकसित हो रहा है और उत्पादन में मानवीय स्पर्श समाप्त हो रहा है। इस प्रकार लोकशाही, साम्यवाद का विरोध करने के लिए विकसित हुई।

लोकशाही का आधार है बहुमत और इसे प्राप्त करने के लिए प्रतिस्पर्धा, पेशबन्दी तथा प्रपन्च विकसित किए जाते हैं। लोकप्रियता का नीलाम होता है। अधिकार का दुरुपयोग, गुण्डाशाही का भय और भ्रष्टाचार का विस्तार होता है। इस कारण महात्मा गाँधी ने लोकशाही, शस्त्र–सत्ता, धन–सत्ता, यन्त्र–विज्ञान की असफलता के कारण पीड़ित मानवता के ऋण का उपाय, सर्वोदय में खोजा है।

मानव सामाजिक तथा राजनीतिक चिन्तन के माध्यम से जिन प्रक्रियाओं से गुजर चुका है, उसके आगे का कदम सर्वोदय है। अब तक हुई राजनैतिक क्रान्तियों ने भौतिक उन्नति को ही मानव का सर्वोच्च लक्ष्य माना और वास्तविक लक्ष्य के विषय में चिन्तन नहीं किया।

सर्वोदय के सिद्धान्त

विनोबा ने सर्वोदय की व्याख्या करते हुए इसके मूल सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया है। यह सिद्धान्त रस्किन एवं गाँधी द्वारा प्रणीत अन टू द लास्ट अन्त्योदय और कालान्तर में सर्वोदय के माध्यम से अहिंसक क्रान्ति की वैश्विक (ग्लोबल) विचारधारा के रूप में व्यक्त हुए। विनोबा के शब्दों में – "सर्वोदय एक नवीन विचार है, यह जीवन की वैयक्तिकता को स्वीकार करता है। यह जीवन को संकीर्ण बन्धनों में बाँधने का विरोध करता है। यह जीवन को व्यक्ति तथा समाज, समाज बनाम राज्य, राष्ट्रीय बनाम अंतर्राष्ट्रीय, लोकतंत्र बनाम धर्म, वैयक्तिक मुक्ति बनाम सामाजिक प्रगति में विभाजित नहीं करता।"[3]

"सर्वोदय कभी दोहरे मानदण्डों में विश्वास नहीं रखता। इसकी मान्यता है कि व्यक्ति तथा समाज के कल्याण के मध्य कोई भी संघर्ष नहीं है। प्रगति का अर्थ है सभी की प्रगति। एक व्यक्ति की हानि, दूसरे का लाभ कभी नहीं बन सकती। हम सभी इस प्रकार बन्धे हैं, कि किसी का कोई निजी संसार नहीं है। हम व्यक्तिगत या निजी अस्तित्व की रचना तो कर लेते हैं किन्तु अस्तित्व एक ही है।"[4]

"सर्वोदय एक ऐसा शब्द है, जिसके गर्भ में इतने अधिक अर्थ हैं कि हम उसका जितना अधिक अभ्यास करते जाते हैं, उतने ही नये अर्थ प्रकट होते जाते हैं। और शनैः शनैः स्पष्ट होते जाते हैं फिर भी एक बात स्पष्ट है– जब भगवान ने मनुष्य समाज को बनाया, उसने स्वार्थों का संघर्ष नहीं बनाया (व्यक्तिगत हो चाहे सामाजिक) कोई भी पिता अपनी सन्तानों के मध्य स्वार्थों का संघर्ष नहीं चाहता।"[5]

सर्वोदय का विचार, जैसा कि गीता में कहा गया है कि सभी के सुख में एक का सुख है। "इसके मूल में अहिंसा एवं सत्य है। व्यक्ति को कभी भी वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन में असत्य में विश्वास नहीं करना चाहिए। व्यापार तथा व्यवसाय में भी नहीं। अपने जीवन में कभी भी हिंसा को नहीं आने देना चाहिए। रचनात्मक कार्यक्रम समाज के उत्थान के लिए बनाए गए हैं। इनको व्यक्तिगत रूप से या मित्रों एवं साथियों के सहयोग से, आवश्यकतानुसार स्थानीय संस्थाओं की स्थापना करके चलाने चाहिये।"[6]

सर्वोदय का दृष्टिकोण है– "हम सभी के साथ अपने कल्याण की भी कामना करते हैं। प्रश्न है– कि हम प्राथमिकता किसे दें? यदि हम दूसरों के कल्याण की कामना करते हैं तो यह सर्वोदयी दृष्टि है। इससे उत्पन्न बाह्य बाधाएं हमें आन्तरिक संन्तोष देती हैं। बाह्य रूप से हम पीड़ित होंगे, परंतु आन्तरिक रूप से हम प्रसन्न होंगे।"[7]

"सर्वोदय का आध्यात्मिक आधार अद्वैत है, अर्थात् द्वैत की समाप्ति। यह विचार केवल मानसिक नहीं है। विश्व में इसे प्राप्त करना चाहिये।"[8]

सर्वोदय दर्शन सम्पूर्ण समन्वयवादी है और सभी दार्शनिक विचारों को निकट लाता है।"[9] यह किसी वाद के प्रति, प्रतिक्रिया नहीं है। यह भारत का अपना विचार है, अपनी व्यवस्था है, लेकिन ऐसी भी नहीं कि इसको अन्य देशों में लागू न किया जा सके। इसका बाह्य रूप देश, काल एवं परिस्थिति के अनुरूप हो सकता है। "सर्वोदय दर्शन का मौलिक तत्व अनाग्रह है किन्तु आन्तरिक स्वरूप वैश्विक है। जयप्रकाश नारायण ने लिखा है कि एकाकी विचारधाराएं जो अपनी पूर्णता का बखान करती हैं, अन्ततः सर्वोदय में विलीन हो जायेंगी।"[10]

सर्वोदय विचारधारा में आमतौर पर अनुयायियों सर्वोदयी नाम से पुकारा जाता है, जो भ्रामक है। सर्वोदयी अन्य व्यक्तियों की तरह सामान्य जन है। राजनीतिक दल अपनी सुविधा के लिए आमतौर पर ऐसी संज्ञा का प्रयोग करते हैं। सर्वोदय, पार्टी या दल नहीं है। यदि कुछ है तो सर्वोदय तीसरी शक्ति है। तीसरी शक्ति भी ऐसी जो हिंसा का विरोध करती है और यह राज्य की शक्ति से परे है।

सर्वोदय व्यवस्था के चार स्तंभ हैं। विनोबा लिखते हैं कि– "मुझे यह स्पष्ट रूप से कहना है कि सर्वोदय व्यवस्था में हम सभी को शारीरिक श्रम करना है, हमारी इच्छा सर्वोदय को क्रियान्वित करने की है। किंतु यह क्रियान्वयन कृषकों के हाथों में रहना चाहिए और उन्हीं के द्वारा सम्पादित होना चाहिए। उत्पादन, श्रम की सर्वोपरि आवश्यकता है इसमें वर्ष भर रोजगार उपलब्ध होता है। ग्राम

में उत्पन्न शुद्ध उत्पादन गाँव में अन्तिम उत्पाद रूप में बदल जाता है। गाँव के बच्चों को दूध मक्खन मिलना चाहिए। सभी उत्पादन स्थानीय उपयोग के लिए हों। केवल बचत उत्पादकों को नगरों में भेजा जा सकता है।

दूसरे– सर्वोदय भूमि के निजी स्वामित्व में विश्वास नहीं करता। वही व्यक्ति जो भूमि जोतने बोने की इच्छा रखता है, उसे भूमि प्राप्त करने का अधिकार है। गाँव को एक परिवार की तरह जीना सीखना है।

तीसरे– सर्वोदय, गाँव के सभी बच्चों के लिए नई तालीम देने में विश्वास करता है।

चौथे– सर्वोदय का अर्थ है– वर्ग एवं जातिविहीन समाज।"[11]

सर्वोदय का नया आदर्श है स्वराज, जिसके लिए हमें कार्य करना है हम सर्वोदय का आदर्श रखते हैं। ऐसे आदर्श के बिना जीवन में प्रगति नहीं हो सकती। वास्तविकता यही है कि स्वराज के विचार का प्रगट रूप ही सर्वोदय है। स्वराज की अवधारणा में ही समाज सुधार निहित है। इसीलिए हमें सर्वोदय की सद्भावना को गाँव–गाँव तक पहुँचाना है। इसी उद्देश्य के लिए हमें काम करना है, जीना है और मरना है।"[12]

सर्वोदय में व्यापकता है। किसी समाज में दो परिवार दुःखी और सौ परिवार सुखी हैं, वहाँ सर्वोदय नहीं है। एक सौ दो परिवार सुखी हों, तभी सर्वोदय है। सर्वोदय में व्यापकता का अर्थ ही यह है कि उसमें सबका समावेश हो, केवल बहुसंख्या का नहीं।

अक्षम् को सक्षम् बनाने के मूल में प्रेरणा प्रेम की है। बालक अक्षम् है। माँ का प्रेम उसे सक्षम् बनाता है। इसलिए प्रेम एक निर्पेक्ष मूल्य के रूप में उभरता है।

कुल मिलाकर निष्कर्ष यह है– "सर्वोदय समाज निरपेक्ष, शाश्वत और व्यापक मूल्यों की स्थापना करना चाहता है। सबके लिये समान रूप में जो नहीं है, वह अशाश्वत है।"[13] "सर्वोदय दर्शन का अर्थ यह है कि जितनी वस्तुएं हैं, वे सब हमारे जीवन की विभूतियां बनेंगी। ऐसा नहीं होगा तो सभी जगह संघर्ष होगा।"[14]

सर्वोदय के आधार

"सर्वोदय कहता है– केवल भौतिक उन्नति ही पर्याप्त नहीं है। वह उन्नति ही क्या है, जिसमें व्यक्ति की उन्नति न हो। वह क्रान्ति ही कैसी? जिसमें मानवता का नैतिक स्तर ऊपर न उठे। सर्वोदय कहता है– जो तोको, कांटा बोये, ताहि बोई तू फूल। पत्थर का जवाब पत्थर से देने में, अत्याचार का प्रतिकार अत्याचार से करने में कौन सी क्रान्ति है। क्रान्ति का साधन है– हृदय परिवर्तन, जीवन–शुद्धि और प्रेम का अधिकार विस्तार।"[15]

सर्वोदय दर्शन जीवन मूल्यों में परिवर्तन द्वारा क्रान्ति चाहता है– द्वैत से अद्वैत की ओर भेद से अभेद की ओर, इस अनुभूति को विकसित कर भीतर एकत्व की ओर बढ़ता है। जगत के कण–कण में एक ही तत्व के दर्शन करता है। वह ईशावास्यमिदं सर्व यत्किन्चित् जगत्याम् जगत् मानने में विश्वास करने पर बल देता है। सोहम् तथा तत्वमसि के द्वारा सारे भेदभाव समाप्त हो जाते हैं। सर्वोदय मानवीय विभूति के विज्ञान में विश्वास करता है। मनुष्य भी उसके लिए विभूति है। वह सृष्टि भी है और देशकाल भी।

फल–निरपेक्ष, कर्तव्य हमारा धर्म है। सर्वोदय की मान्यता है– मेहनत इंसान की और दौलत भगवान की। तेन त्यक्तेन भुंजीथा– मेहनत करना हमारा कर्तव्य है और फल देना समाज का।

दादा धर्माधिकारी के शब्दों में– शास्त्रीय भाषा में कहूँ तो जीवन का विकास व जीवन का अधिक से अधिक विस्तार हमने जीवन का परममूल्य माना है। सर्वोदय का संकल्प अल्प नहीं, महान है। केवल महान नहीं समग्र है। जितना जीवन है, वह सारा ही ईश्वर से भरा हुआ है।

सर्वोदय के बुनियादी सिद्धान्त

सर्वोदय के बुनियादी सिद्धांत है– सबका जीवन सुखी हो, सर्वोदय मानता है कि सबका जीवन संपन्न हो, यह केवल कोरा आदर्श नहीं है, यह दर्शनवृत्ति ही नहीं है यह व्यवहार की नीति भी है। मनुष्य के आदर्श का संकल्प सबके लिए समान होना चाहिये।

प्रगति और आदर्श

जब हम सभी के जीवन में सुख की कामना करते हैं तो उसका अर्थ है– सभी प्रगति करें, विशिष्ट दिशा में कदम बढ़ाना और अपने गन्तव्य की तरफ बढ़ना ही प्रगति है। इसी प्रकार कोई दुःखी न हो, सब सुखी हों यही आदर्श है इसमें सदाचार का विशेष महत्व है। मानव समाज में बुद्धि, शक्ति का स्थल है और जब यह बुद्धि, मनोबल के रूप में परिवर्तित होती है, तो दूसरों का हित करती है। यही सर्वोदय है।

अहिंसक वीरता

सर्वोदय अहिंसा में विश्वास करता है। इसमें वैर और वृत्ति के लिए स्थान नहीं है। विज्ञान अहिंसक–वीरता पर बल देता है। वह सर्वोदय के समर्थन से, अक्षम को सक्षम बनाने पर बल देता है। सृष्टि में वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है। सर्वोदय का आधार है– दूसरों की अक्षमता पर निराकरण व अपनी क्षमता का विकास।

प्रेम और अहिंसा

जीवन का परम मूल्य है प्रेम और अहिंसा। प्रेम के पीछे है अहिंसा जो आधारभूत मूल्य है– जो सत्य से अनुप्राणित होता है। मनुष्य के स्वभाव को ये मूल्य बदलते हैं।

सर्वोदय, धर्म और विज्ञान

धर्म क्या है? और इसकी क्या जरूरत है? यह प्रश्न अनादि काल से सदा चला आ रहा है। शंकराचार्य ने तैतीरियोपनिषद का भाष्य किया और उसमें सत्यम् ,सन्ध्याम् आसीत अवरणीय प्रत्यवाय के लिए कहा कि सन्ध्या नित्य करनी चाहिए, अन्यथा पाप होगा। समाज के नित्य कर्मों का पालन नागरिकों का धर्म है, उसके लिए प्रतिफल, पुरस्कार व पारितोशिक की आशा नहीं रहती। कुछ लोग निष्काम कर्म को मूर्खता मानते हैं, जबकि निष्काम कर्म में, अपने स्वार्थ के बजाय दूसरों का हित अधिक होता है।

विज्ञान और धर्म का निरन्तर विरोध चलता है। सवाल यह है कि क्या इन दोनों को मिलाया जा सकता है? सर्वोदय में जीवन के दो टुकड़े बनते नहीं, व्यक्ति के विरुद्ध समाज खड़ा नहीं होता और न व्यक्ति समाज के विरुद्ध। सर्वोदय की यही विशेषता है।

उपसंहार

आज के जमाने में अगर मनुष्य को मनुष्य से मिलाना है, तो भेद– निराकरण की क्रान्ति का कार्य होना चाहिये। हमारा उद्देश्य भेद का निराकरण और अभेद की स्थापना है। हमारी क्रान्ति की प्रक्रिया में संघर्ष नहीं सख्य होना चाहिये। सख्य से अद्वैत की स्थापना करने के लिये, विरोध के निराकरण की आवश्यकता है। ऐसा शोधार्थी का विश्वास है।

सन्दर्भ

1. धर्माधिकारी, दादा. (1957). 'सर्वोदय दर्शन'. सर्व सेवा संघ प्रकाशनः वाराणसी.
2. भावे, विनोबा. (1972). 'सर्वोदय विचार' (अंग्रेजी). सर्व सेवा संघ प्रकाशनः वाराणसी.
3. नारायण, जयप्रकाश. (1957). 'समाजवाद से सर्वोदय की ओर'. सर्व सेवा संघ प्रकाशनः वाराणसी.
4. भूदान (अंग्रेजी) साप्ताहिक. 26–9–1955.
5. हरिजन, पृष्ठ **422.**
6. विनोबा प्रवचन. 22–9–1958.
7. विनोबा प्रवचन. 19–02–1959.